

## खड़गपुर को मिला शौर्य



टेक्नोलॉजी और सोशल-कल्चर के बाद KGP को खेल की दुनिया में एक नया आयाम मिला शौर्य के रूप में जिसका उद्घाटन पूर्व निदेशक श्री शिशिर कूमार दूबे ने 31 अक्टूबर को किया तथा इसका समापन 3 नवम्बर को हुआ। पिछले कुछ प्रत्यावर्तों को ठुकरा दिये जाने के बाद आखिर इस साल जिमखाना ने Sports Meet के आयोजन के लिये मंजूरी दे दी। इस नीट में भाग लेने हेतु कई कालेजों को न्यूता दिया गया और इसके फलस्वरूप KITS, NIT राऊरकेला, Saint Xavier's राँची और MERI कोलकाता ने अपनी बेहतरीन टीमों को इस फेस्ट में भेजा। 'शौर्य' में हाँकी, टेबल टेनिस, लॉन टेनिस, वॉली बाल, बास्केट बाल के रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। IIT की ओर से इंटर IIT की संभावित टीम ने भाग लिया और 5 में से 4 में विजयी रही है।

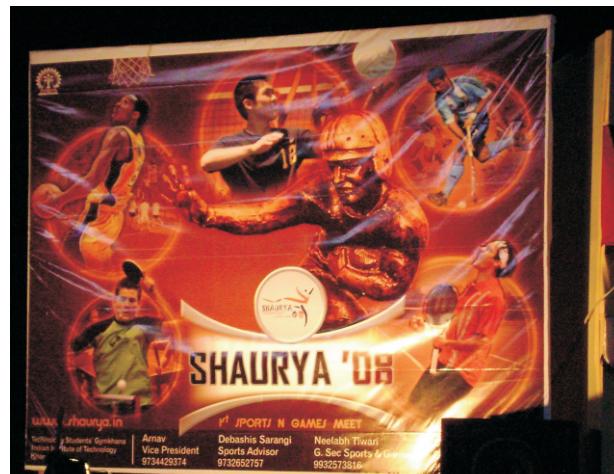
हालांकि इंटर IIT टूर्नामेंट अपनी जगह पर है पर शौर्य ने अपना अलग महात्व प्राप्त किया है और इसके आयोजन का मुख्य उद्देश्य इंटर IIT से ही जुड़ा है। शौर्य ने इंटर IIT टीम को पहली बार टूर्नामेंट से पहले एक जुट होकर खेलने का एक सुनहरा अवसर प्रदान किया है जिसके साथ ही इंटर IIT में बेहतर प्रदर्शन की उम्मीद की जा रही है। इसके पहले का प्रत्यावर्त आम जनता पर केंद्रित था और उनका उद्देश्य सभी को खेलों के तरफ आकर्षित करना था। लेकिन जिमखाना को एक और SF-क्षितिज जैसा फेस्ट मंजूर ना था क्योंकि उनका मानना था की इन फेस्ट और वाकी इंवेंट्स के कारण KGP लाइफ काफी व्यरुत हो गयी है। वहीं दूसरी ओर शौर्य का उद्देश्य KGP की टीम का दूसरे कालेजों की बेहतरीन टीमों से मुकाबला करा कर जनता का मनोरंजन तथा साथ ही इंटर IIT में हमारे गिरवते प्रदर्शन में सुधार लाना है। इसी कारण जिमखाना ने इस meet को हरी झंडी दे दी। खेलों के दौरान नई प्रतिभाओं को उभरने का मौका भी मिला। कोर्चों ने इस तरह के फेस्ट को काफी साराहा है और परिणाम रूप यह हुआ की अब जिमखाना को इंटर IIT टीम का चयन करने में काफी आसानी होगी और पहली बार इंटर IIT टीम को टूर्नामेंट से पहले ही एकजुट होकर खेलने का अनूभव रहेगा।

सूत्रों के अनुसार यह meet दिसंबर में आयोजित होने वाला था लेकिन इसमें काफी कठिनाईयाँ आयी।

कालेजों में परिक्षाएँ चलना और इंटर IIT से पेहले शौर्य में खिलाड़ियों का चोट खाना, जो कोर्चों को मंजूर ना था। इसलिए शौर्य का आयोजन 31<sup>st</sup> Oct को करने का निश्चय किया गया जिसके कारण केवल दस दिन में ही शौर्य की एक टीम बनाई गई जिसमें दस Secretaries, बारह 2<sup>nd</sup> years और 1<sup>st</sup> year volunteer लिए गए। इतने कम समय में कालेजों को बुलाने में कई दिक्कतें हुईं और सुरक्षा कारणों से लड़कियों की टीम नहीं आ पाई। इसलिए इस बार लड़कों की टीम ही आ पाई और समय के आभाव के कारण कुछ चुनिंदा खेलों का ही आयोजन हो पाया। हालांकि यह नीलाम तिवारी का प्रस्ताव था लेकिन उनके अनुसार President, V.P, Sports advisor ने काफी प्रोत्साहन दिया और जहाँ वे शौर्य में व्यस्त थे उनकी जिमखाना के प्रति नीजी जिम्मेदारियों का दारोमदार बिपूल ने उठया जो काफी सराहनीय है और हमारे जिमखाना काउनसिल के आपस के तालमेल को दर्शाता है।

### मेहमान नवाज़ी:

शौर्य का आयोजन सफलता पूर्वक हुआ और शौर्य की टीम ने मेहमान नवाज़ी में कौई कसर नहीं छोड़ी। खिलाड़ियों को accommodation बैचलर flat में और MMM में दिया गया तथा Judges और टीम Officials को गेस्ट हाउस में रखा गया। Judges वेस्ट बंगाल स्पोर्ट्स असोसिएशन से बुलाए गए थे। खाने के लिए फ्रीमैलैण्ड से कॉन्ट्रैक्ट लिया गया था। खिलाड़ियों ने इस खातिरदारी की प्रशंसा की और दोबारा आने की इच्छा भी जताई।



इस सारे आयोजन के लिए ने जिमखाना ने 1,00,000 रु का फंड दिया था। इसके अलावा प्रति टीम से 1,500 रु की फीस ली गई थी। शौर्य के आखरी दिन 3<sup>rd</sup> Nov तीन फाइनल मैच हुए और KGP हाँकी, टेबल टेनिस, लॉन टेनिस, बास्केट बाल में प्रथम और वॉली बाल में द्वितीय आया। निदेशक और प्रसीडेंट, जिमखाना ने आखरी Basketball मैच का भरपूर आनंद उठाया और प्रोत्साहन के लिए जम कर तालियाँ बजाई। पुरस्कार निदेशक महोदय के हाथों द्वारा दिया गया जिसमें बैस्ट प्लेयर, टीम टॉफी और जीतने वाले प्रत्येक खिलाड़ी को टॉफी मिली। नीलाम के धन्यवाद ज्ञापन से शौर्य का समापन हुई।

भविष्य में शौर्य से काफी उम्मीदें की जा रही है। इसमें कुछ नए खेलों और टीमों के आने की उम्मीद की जा रही है। लड़कियों की टीम आने का पूरा आसार है तथा शौर्य अक्टूबर के मध्य में कराने की संभावना है। शौर्य के अच्छे संचालन के लिए Sponsorship लाने और Core टीम बनाने की भी संभावना है।

पहले ही आयोजन में इतनी सफलता पाना जहाँ शौर्य टीम के प्रबंधन कोशल को दर्शाता है वहीं इसके सुनहरे भविष्य की आस भी जगता है। आशा है शौर्य हर साल, इसी प्रकार खेल के क्षेत्र में टीमों को अपना शौर्य दिखाने का मोका प्रदान करेगा। हमारी शुभकामनाएँ।

### KGP के भूले-बिसरे Lingos

#### झूग-Fail

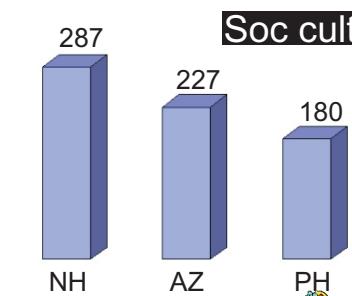
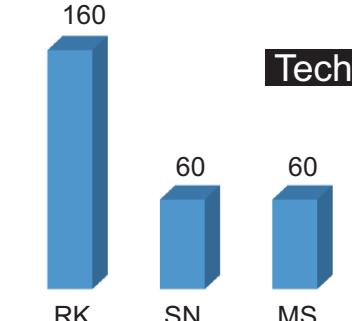
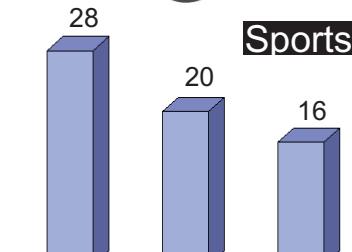
जब परिक्षा में फैल हो जाओ

#### पृष्ठ 2 Great Step



#### पृष्ठ 3 साईकिल समीक्षा

#### पृष्ठ 5 KGP Trends



## ILLU बिना दिवाली

पिछले 25 सालों से लगातार illu मनाने के बाद पहली बार KGP में illu नहीं दिवाली मनाई गई। आइ देखते हैं कि illu बिना इस दिवाली में जनता की प्रतिक्रिया कैसी रही।

SN को मिला कम्पिटर .....

साल में एक ही तो मौका आता है जब लोगों को एक दूसरे से मिलने किसी भी हाँल में जाने का अवसर मिलता है, पर इस बार SN हाँल को टक्कर मिली RLB से।

बंदा 1: इस बार कुछ दिवाली है यार, SN एवं MT के बाहर चलो अब RLB हो आते हैं।

बंदा 2: RLB तो जाना ही है। सुना है के नया बना है तो काफी सुंदर बना है। जितनी सुंदरता के दर्शन उतनी जग मग दिवाली।

बाहर की जनता:

हर बार लगता था मानो रोशनी कहानी कहती है, रंगोंनी बोलती है, जलते टीप मन मोहते हैं। पर इस बार ऐसा कुछ न दिखा, दिवाली का आनंद लगा कुछ फीका। दिवाली से हम कुछ आशा लेकर आए थे पर दिवाली पर सिर्फ सवाल पूछते रह गए -

"क्या बस इतना ही है ?

भाई illu कहा बना है ?

कौन सा हाँल इस बार illu जीता है ?"

दिवाली का खाना

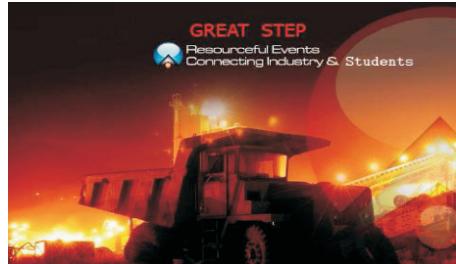
हर बार illu के परिणाम के इंतजार में रात कब गुजर गई इसका पता ही नहीं चलता था। कई लोग तो भूके पेट ही रह जाते थे। लेकिन इस बार लोग मिठाई पर मिठाई खाते रह गये। बिना किसी चिंता के लोग अपना पेट अटने बाहर निकले। ऐसा पहली बार हुआ था कि लोगों ने जीभ कर कर खादिष्ट व्यंजनों का आनंद लिया।

आसमान में illu:

पहली बार ऐसा हुआ कि Inter-wing रॉकेट जंग छिड़ी हो। लोग कॉर्डियर से ही रॉकेट छोड़ने लगे और बम के धमाकों ने सारे हाँल को हिला कर रख दिया। illu बिना इस दिवाली में चटाई नहीं तो सही आसमान में ही दिये जला दिये गए। जो एकता illu बनाने में नजर आती थी उसी एकता का प्रदर्शन साथ मिलकर आतिशबाजी में हुआ।

परिवर्तन समाज का नियम है किंतु यह वर्ष KGP में इतने परिवर्तन लायेगा, यह किसी ने नहीं सोचा था। यदि इसे परिवर्तनों का वर्ष भी कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। जहाँ सत्र के प्रारंभ में ही प्रथम वर्ष के कुछ छात्रों को सीनियर हाँल के दर्शन कराये गए वहीं इस बार KGP ने अपना पहला स्पोर्ट्स फैस्ट भी देखा। इस बार तो हमारे दिल के काफी कठीब, दिवाली पर वर्षों से चली आ रही प्रथा illumination में भी व्यवधान आ गया।

Open House Discussion के असफल रहने के कारण इस बार किसी हाँल ने दिवाली पर illu नहीं किया। परंतु कहीं यह प्रथा KGP से पूर्णतया समाप्त ना हो जाए, अतः इस प्रथा को जीवित रखने के लिये कुछ छात्रावासों ने छोटे रत्त पर सांकेतिक illu करने का निर्णय लिया है। यह मुख्यतः जूनियर्स को फण्डा देने के लिये किया जा रहा है ताकि इस परंपरा को जीवित रखा जा सके। इसी क्रम में RP hall ने 2 नवंबर को illu किया। कुछ छात्रावासों ने जिनमें SN, Azad व RK शामिल हैं 4 जनवरी को illu करने का निर्णय लिया है। कुछ छात्रों का यह भी मानना है कि यह illu alumni के दबाव में आकर भी किया जा रहा है क्योंकि 4 जनवरी को alumni meet भी है तथा उनका एक बड़ा वर्ग इस परंपरा का समर्थन करता है। वैसे यह illu जिमखाना दूरा आयोजित नहीं है तथा इसमें छात्रावासों के बीच कोई प्रतियोगिता भी नहीं है। यह तो तय है कि यह illu छोटे रत्त पर ही होगा जिसमें पिछले वर्षों की तरह भव्यता नहीं होगी, फिर भी यह देखने की बात है कि दिवाली बिना illu कैसा होगा तथा क्या यह सांकेतिक illu इस परंपरा को जीवित रख पायेगा?



31 अक्टूबर से 2 नवंबर के बीच खेलने अभियांत्रिकी विभाग ने अपना विभागोन्सव 'GREAT STEP '08' आयोजित किया। यह इस विभाग के छात्रों द्वारा इतने बड़े रत्त पर आयोजित प्रथम प्रयत्न है। शुक्रवार शाम को नेताजी समाजार में इसका शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर ETMS ने भी अपना जादू बिखेरा। इस उत्सव में कठीब 100 विद्यार्थी देश के प्रतिष्ठित संस्थानों जैसे ISM धनबाद, IT - BHU, अन्ना विश्वविद्यालय, NIT ROURKELA आदि से कठीब 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

अन्य विभागोन्सवों के विपरीत इस विभागोन्सव ने काफी प्रायोजक हासिल किये तथा दक्षता के साथ सारे कार्यक्रमों का आयोजन किया। Robotics से प्रेरित दो कार्यक्रम - GEOBOTICS - LOAD HAULER और GEOBOTICS - 2

UNDERWATER CHALLENGE काफी सफल रहे। रात भर चलने वाली प्रतियोगिता 'Industrial Design Problem' काफी पसंद किया गया। अन्य कार्यक्रम जैसे Paper Presentation, Case Study, Geo Quiz आदि भी सफल रहे।

बाहर संस्थानों के विद्यार्थियों के MS, HJB, JCB और पटेल हाँल के कॉमन रूम्स में रखा गया। Panel Discussion में विशिष्ट कंपनियों के अधिकारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन डॉ डेविड नून जो खास ऑस्ट्रेलिया से आये थे, उनके वचनों से हुआ।

इस विभागोन्सव ने पहले ही अध्याय में सफलता के झंडे गाड़ दिए। आशा है ऐसे आयोजनों से छात्र-उद्योग संबंध सुदृढ़ होंगे। खनन अभियांत्रिकी विभाग तथा GREAT STEP के छात्र-आयोजकों को हमारी शुभकामनाएँ।

## अब भी मैं शोर हूँ...ः छेदी भाई

उत्तरः डी.एम., पुलिस के सहयोग से तीन चार बार निदेशक, उपनिदेशक और DOSA से बात की

लेकिन कुछ नहीं हुआ। उनका कहना है कि ये नियम छात्रों की भलाई के लिए बना है और इसे हटाना मुमकिन नहीं है।

प्रश्नः टिकू और मोइले जैसे व्यंजनों का नाम कैसे पड़ा?

उत्तरः टिकू और मोइले का नाम LLR हाँल के दो छात्रों के नाम पर पड़ा है। उनके दोस्तों ने इसे नाम दिया था।

प्रश्नः IIIT के छात्रों के बारे में आप क्या सोचते हैं?

उत्तरः जैसे पांचों उंगलियाँ बचावर नहीं होती, वैसे कुछ छात्र अच्छे होते हैं तो कुछ खराब। कुछ शराबी होते हैं जिनसे मुझे सख्त नफरत है।

प्रश्नः आपके और अन्य रेस्टोरेंट में क्या अन्तर है?

उत्तरः मेरा व्यवहार अच्छा है, मेरे यहाँ खाना भी अच्छा मिलता है जिससे छात्र बार-बार आते हैं। मेरा नाम पूरी दुनिया में है जिसके कारण पास-आउट छात्र भी मुझसे मिलने आते हैं और मेरी मदद करते हैं।

प्रश्नः आपकी सेहत कैसी है?

उत्तरः अब उम्र हो गई है, घुटने में दर्द रहता है, काफी दग्ध के बाद भी दर्द नहीं गया, लेकिन अब भी मैं शोर हूँ।

## साईकिल समीक्षा

साईकिलें kgp की पहचान हैं। कभी कभी तो से खतरा महसूस होता है कि कोई नया आदमी इन साईकिलों की वजह से कैम्पस को अजायबघर न समझते हैं, किंतु और के चलाने में से खतरा है कि कहीं भी जाना हो जानेवाला B.C.Roy Tech Hospital ही पहुँचेगा। मेरे ख्याल से तो ऐसी महत्वपूर्ण साईकिलों पर एक डिपार्टमेंट ही होना चाहिए लेकिन तत्काल आपकी सुविधा के लिए साईकिलों और उनके मालिकों का एक वर्गीकरण प्रस्तुत कर रहा हूँ :

नई साईकिलें : से मोह से अंधे लोगों की साईकिलें हैं जिनको पता नहीं होता

साईकिल की नियति ही है पुराना हो जाना। साईकिल को देख कर इन्हें

ऐसी ही खुशी होती है जैसी कभी ऐश्वर्या को देख कर सलामान को होती थी।

ऐसी साईकिलों में आमतौर पर तीन वाले होते हैं और हफ्ते में 15 बार इनकी

साफाई होती है।

पुरानी साईकिलें : IT में साईकिलें आमतौर पर कभी पुरानी नहीं होती, पाँच पाँच मालिकों को झेल चुकी साईकिलें भी नहीं अगर फिर भी आपकी साईकिल को पुरानी का दर्जा गिल चुका है तो आपको ASI वालों से सावधान रहने की जरूरत है। आप पर हड्डिया की खुदाई में निकले रास्त्रीय धरोहर को चुनाने का आरोप लग सकता है। इन साईकिलों में घंटी के अलावा सबकुछ बजता है और क्लास देर से आने वालों के लिए सबसे उपयुक्त होती है।

आखिर दोज-नये नये बहाने की जरूरत नहीं पड़ती।

बिना घंटी की साईकिलें : ये बड़े ही अभागे लोगों की साईकिलें होती हैं। इनके



मालिक कन्याओं को देखकर घंटी भी नहीं बजा सकते। सीटियों का प्रचलन kgp में वैसे भी नहीं है।

लड़कों के पास लेडीज साईकिलें : आप धन्य हैं। आप महात्मा गांधी की उस परंपरा के बाहर हैं जिसके तहत उन्होंने toilets साफ किए। नारी

सशक्तिकरण की सार्वजनिक अभिव्यक्ति के लिए आपने जो रूप धारण किया

है वह मानव इतिहास में अद्वितीय है। आपका नाम मानव जाति

के इतिहास में रवर्णकर्तरों में निखा जाएगा।

लड़कियों के पास जेन्टल्स साईकिलें : लड़कियाँ वो सब कर सकती हैं जो लड़के

कर सकते हैं। Yo Girls!

दृढ़गाला छाप साईकिलें : अर्थव्यवस्था अस्थिर है और नौकरियों की कमी है।

खड़गपुर में दूध की खपत भी है। इचादा अच्छा है। कैम्पस

ना भी हो तो कोई

बात नहीं।

Profs की साईकिलें : ये सही मायनों में ऐतिहासिक साईकिलें हैं। इनमें से कई ने नेहरू जी का प्रयास भी देखा है और अर्जुन सिंह की बकवास भी। ये चंद्रगुप्त की उस तलवार की तरह हैं जिसकी कामना सम्राट अशोक ने की थी। पर क्षमा गुरुदेव हम आपकी साईकिल की कामना नहीं कर सकते (आखिर तलवार पर मेनेंस का खर्च तो आता नहीं)।

इनके अलावा भी आपको साईकिलों के कई और प्रकार देखने को मिल सकते हैं। आप अपना research जारी रखें।

## बात और माट

मैं आपको कोई नयी बात नहीं बताने जा रहा हूँ। जो मैं कहने जा रहा हूँ उससे आप सभी भलिभाँति परिचित हैं। वैसे अगर देखा जाए तो कोई भी बात नयी होती ही नहीं है, नया तो उसे प्रस्तुत करने का अंदाज होता है। आकर्मीडीज और न्यूटन जैसे महापुरुषों ने भी जो खोजा था वे तथ्य भी सूचि के प्रारंभ से ही इस संसार में भौजूद थे किंतु दूसरों और इनमें अंतर यह था इन्हें उनमें उत्पादन और गुरुत्वाकर्षण नज़र आया था। तो बस अब आप समझ लीजिए कि कल अगर आपको किसी भी वर्तु में नयी बात नज़र आती है तो आप भी न्यूटन बन सकते हैं।

लेकिन मैं आपको न्यूटन बनने के लिए देने के लिए नहीं लिख रहा हूँ। लेकिन क्या कहा जाए ये बातें जो होती हैं वो आदमी को कहाँ से कहाँ पहुँचा देती हैं। कई बार तो ये ऐसा भटकाती हैं कि आदमी भूल ही जाता कि वास्तव में बात क्या चल रही थी। वैसे बातें भी कई प्रकार की होती हैं। ये बातें ही हैं जो कभी आदमी को राजा तो कभी रंग बनाती हैं। ये बातें ही हैं जो इस KGP के सदाबहार सूखे मौसम में कुछ लोगों को हरियाली का भी आभास कराती रहती हैं। देखिए मैं फिर इन बातों के चक्रकर में पड़ गया और बात वही की वहीं रह गयी।

विलेश अब इन बातों को छोड़कर मूदूदे की बात करते हैं। लेकिन वो भी तो बात ही है। हुआ यूँ कि इस बार मैं अपने एक दूर के भाई को (अब यह मत पूछियेगा कि किस भाई को क्युँकि उसके पीछे भी एक बड़ी बात है और फिर इस चक्रकर में अगर नयी बात शुरू हो गयी तो फिर मुख्य बात एक बात ही बनकर रह जाएगी) एक पार्टी में पंडा दे रहा था और सही कहा जाए तो उसे भी KGP का महिमा गान सुना रहा था। मेरा भाई भी एक भक्त की तरह कृतज्ञात्पूर्वक मेरी बातों को गृहित कर रहा था। वैसे इस बात के पीछे भी एक बात थी और वो बात एक सुंदर कन्या थी जिससे थोड़ी देर पहले ही मेरी मुलाकात उसी पार्टी में हुई थी और जिससे बात करने को मैं बड़ा ही आतुर था। मैंने भी उस कन्या को इम्प्रेस करने के लिए लंबी-लंबी बातें अपने भाई को सुनायी। मैंने इम्प्रेस करने के लिए अपनी बातों में कोई कसार नहीं छोड़ रखी थी।

उत्तमी अचानक कन्या के उन कोमल औंठों से कुछ शब्द निकलें। कन्या ने एक बड़ी सुंदर सी बात पूछी और वो बात थी कि क्या आप हमेशा ऐसे ही बातें करते हो? मेरे घोरे की मुरक्कान अचानक गायब से हो गयी। लगा जैसे किसी ने बड़े प्यार से तीर चला दिया है। लेकिन इस प्रश्न में सच्चाई तो थी। फिर भी इज्जत तो बचानी ही थी। कहीं +ve के चक्रकर में -ve ना हो जाए। फिर मैंने अपने अकल का घोड़ा दौड़ाया और पुनः बातों का मोर्चा संभाला। मैंने कहा - “जी हाँ, मैं बातें करता हूँ। किंतु इसमें बुराई ही क्या है? बातें से ही तो दुनिया चल रही है। बिन

बातों के क्या आप इस दुनिया की कल्पना कर सकती हैं। और फिर ईश्वर ने आपको जो एक सुंदर सा मुँह दिया है वो बोलने के लिए ही है ना। मैं तो कहता हूँ कि जो मन-भर बातें नहीं करते वे ईश्वर और उनके आदेश का अनादर करते हैं। मैं तो ईश्वर को नाराज़ नहीं कर सकता। इसीलिए मैं तो जम के बातें करता हूँ और सबको बातें करने की प्रेरणा देता हूँ। आप भी आइए और बातें कीजिए तथा अपने मुँह के जन्म को सार्थक कीजिए।”

तत्पश्चात्थोड़ी देर तक तो वह कन्या मुझे घुरते ही रह गयी और मैं अपने उत्तर पर मंद-मंद मुरक्काता रहा। फिर अचानक से उसने मोर्चा संभाला और कहा, “वैसे भी तुम कैम्पस में बातों के अलावा करते भी क्या हो?” अब तो भई बात इज्जत पर बन आयी थी। मुझे हर हाल में मुँहतोड़ जवाब देना था। आखिर धर्म का पालन जो करना था। आखिर एक KGPIan को कोई बातों में कैसे हरा सकता है। मैंने पुनः मोर्चा संभाला और इससे पहले की किसी और की बात शुरू हो मैंने अपना मुँह खोला - “भई यह आपसे किसने कहा की हम केवल बातें ही करते हैं। जितनी मेहनत हम करते हैं उतनी कोई करता भी है? पूरा DC हमें देखना रहता है। ना जाने कितनी नाइटआउट्स लग जाती हैं इसके पीछे। और फिर हमारी जो इतनी societies हैं वो क्या ऐसे ही चलती हैं। यह सही है कि हम एक-दो productions ही देते हैं किंतु उसके पीछे कितनी मीटिंग्स हम करते हैं और वो भी देर रात तक। और हमारा बात करना जल्दी भी है। हमारी पूरी मीटिंग्स में केवल बातें ही तो होती हैं। हमें प्रॉफेस जैसी प्रजाति से भी बचना रहता है और उसके लिए कितने प्रकार की बातें करनी पड़ती हैं, आपको क्या मानूम्। फिर हाँत में कितनी बातें करनी पड़ती हैं। ना करें तो फिर काम से काटा करना कैसे सीखेंगे। और सबसे जल्दी तो बब होता है जब हम प्रूफ्स हो चुके होते हैं। तब ये बातें ही तो हमें बचती हैं। इसलिए तो हम इसे बड़े प्यार से भाट करते हैं। और अगर भाट ना हो तो फिर हमें KGP के प्रसिद्ध फड़े कैसे मिलेंगे। भाट ही तो है जिससे की KGP लाइफ होती है और इसी की वजह से हमें KGP के हर कोने की खबर का आदान प्रदान होता है। भाट ही तो हमें जागरूक बनाता है। जब बात अर्थात्भाट की इतनी महिमा हो तो फिर बोलो मैं क्यूँ ना बोलूँ। भाट मारना तो हर KGPIan का जन्मसिद्ध अधिकार और कर्तव्य है।”

अब क्या वो मुझे घुरते ही रह गयी। उसके मुख से एक शब्द भी ना निकला और मैं अपनी विजयी मुरक्कान के साथ पुनः बातें करने में मशागुल हो गया। आखिर मैं एक सच्चा KGPIan हूँ और कर्तव्य पालन में कभी कोई कमी करना मेरी शान और आदत के खिलाफ है।

## बात संपादक की

हम इस सेमेस्टर का चौथा अंक अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। हाल में कैम्पस की प्रमुख घटनाओं में दिवाली रही है। इल्लू की अकल्पनीय अंत से एक और जहाँ सीनियर हॉल के दूसरे तथा प्रथम वर्षीय छात्रों ने चैन की साँस ली, वहीं सीनियर छात्र मायूस नज़र आये। वैसे तो हर हॉल ने परंपरा को बरकरार रखने के लिए इल्लू और रंगोली का कामचलाऊरूप आज़माया। संस्थान के अति सच्चाने नियमों के खिलाफ जहाँ छात्रों ने यह कदम उठाया है, संस्थान पर इसका असर क्षीण ही दिखता है। जहाँ एक और पटाखे फड़े गए और खुशियाँ मनाई गईं, दूसरी तरफ एक ठहराव सा आ गया वर्षों से चली आ रही उस दीति में जिसकी नींव अचल समझी जा रही थी।

कैम्पस में लोगों की आवा-जाही में वृद्धि हुई 'शौर्य' के आयोजन के साथ। इस मुकाबले में कई संस्थानों के छात्रों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का आयोजन 'Inter IIT' के अभ्यास के लिए खासकर किया गया था। प्रथम संस्करण

तथा समय की कमी के बजाए से बस पाँच छेत्रों का आयोजन हो पाया। अगले वर्ष इस प्रयास को और कामयाब देखने की आशा है।

बात अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर की कर्त्ता, तो पिछले कुछ दिनों में अमेरिका में राष्ट्रपति चुनावों ने इतिहास का उलट-फेर होते देखा है। बराक ओबामा अमेरिका के राष्ट्रपति बन चुके हैं। सुना तो यह भी गया है कि इस जीत का जश्न अफ्रीका के कई देशों में भी मनाया गया है। इस आर्थिक संकट के दौर में यह घटना क्या रंग लाती है यह देखने लायक होगा।

भस इन वर्चनों के साथ हम अपने पाठकों से आज्ञा मांगते हैं। शीघ्र ही आनेवाली परीक्षाओं में सबके सफल होने की दुआ करते हैं। अगले सेमेस्टर में फिर मिलने की उम्मीद करते हुए।

जय हिन्द।

संपादक, आवाज़।

छोटी-छोटी मगर जोटी बातें

TECHNOLOGY STUDENTS' GY



## क्षेत्र प्रेम का 'राज'

दुनिया ख्वार्थ पर चलती है। लैकिन आज के इस ख्वार्थ, कलयुगी संसार में भी हर्म सत्युग का दर्शन कराने आए दिन महापुरुष पैदा होते रहते हैं। पर हमारी आँखों पर चढ़ी ख्वार्थ की परत इतनी गहरी हो गई है कि हम इन्हें पहचान ही नहीं पाते। परन्तु सत्य यह है कि ये हमारे बीच ही होते हैं और आज भी ख्वायं से ज्यादा दूसरों के कल्याण की सोचते हैं। हमारे राज ठाकरे जी को ही लिजिए, अपने राज्य के लोगों को नौकरी ना मिलता देख उन्होंने लोगों को खरोजगारीन्मुखी बना दिया। भले ही वहाँ के लोगों को मिलने वाली नौकरी में कोई इजाफा ना हुआ हो, उन्हें दूसरे राज्य से आए लोगों को पीटने का रोज़गार ज़रूर मिल गया है।

द्यान देने वाली बात यह है कि रोज़गार सिर्फ़ कुछ लोगों तक सीमित नहीं है, अस्पताल, फायर ब्रिगेड तथा पुलिस जैसी संस्थाएँ जो अंडरवर्ट के ज़रा कम एक्टिव होने के बजाए से थोड़ी सुरक्षा चल रही थीं, काम उनको भी मिला है। और सबसे ज्यादा रोज़गार तो मीडिया को मिला है। ठाकरे जी की बदौलत मीडिया को इतना मसाला मिल गया है कि अब उन्हें ब्रैकिंग न्यूज़ के लिए किसी बच्चे के गड्ढे में गिरने का या किसी भैंस के ट्रूक से टकराने का इतन्हार नहीं करना होगा।

इतना ही नहीं, ये खरोजगार की लहर अब पूरे देश को अपनी चपेट में ले रही है। इन घटनाओं के बजाए से भी कुछ लोगों को हाथ आज़माने का मौका मिल गया।

कम्युनिस्टों की अगुवाई में वहाँ ट्रेनों में आग लगाई जा रही है। इस घटना से दो बारें पता चलती हैं, पहली ये कि बंगाल से बाहर भी कम्युनिस्ट मौजूद हैं और दूसरी ये कि बंगाल में 'इनएक्टिव गवर्नर्मेंट' होने का इनपर लगा आरोप सरासर गलत है। आखिर इतने एक्टिव कार्यकर्ताओं वाली सरकार इनएक्टिव कैसे हो सकती है! हाँ ये सब सावित करने के चक्रकर्त में अगर रेल की थोड़ी सम्पत्ति नष्ट हुई तो क्या फर्क पड़ता है। रेल कोई इंसान तो है नहीं कि नार्थ इंडियन और अमिनव प्रसाद साउथ इंडियन कह कर भेदभाव किया जाए। रेल तो पूरे राष्ट्र की सम्पत्ति है इसे नष्ट करने का सभी को बराबर हक है।

इन घटनाओं से सिर्फ़ बड़े ही जुड़े हुए हों ऐसा नहीं है, बच्चे भी ठाकरे जी से काफी कुछ सीख रहे हैं। पिछले दिनों ही पड़ोस के एक बच्चे ने अपने क्लास के टॉपर को इसलिए पीट दिया क्योंकि वो खुद हर बार सेकेंड ही आ पाता था। पिता के समझाने पर उसने कहा की राज ठाकरे भी तो यही कर रहे हैं। पिता ने कहा "वो खुद के लिए थोड़ी ऐसा कर रहे हैं, वो तो दूसरों की भलाई के लिए सब कर रहे हैं।" बच्चा भी तपाक से बोला "मैंने न्यूज़ में सुन है, वो भी ऐसा खुद के बोट के लिए ही दास, निष्ठा शर्मा, अभिषेक मीना, निधि कर रहे हैं।" अब बच्चा तो बच्चा ठहरा, उसे राज की महानता हरयानी, प्रतिक भार्कर, रजनीका का राज़ कैसे पता होगा। पर जनता बच्ची नहीं है। उसे पता है पटिदर, अनुराग कटियार, राहुल डे कि ठाकरे जी ये सब बोट के लिए नहीं जनकत्याण के लिए कर रहे हैं। इसलिए आशा है आने वाले चुनाव में, जनता भी उनकी आवाजाओं की कद्र करते हुए उन्हें बोट नहीं देंगी।

## आवाज़ टीम

मुख्य संपादकः कुमार अभिनव

संपादकः विकास कुमार, पंकज कुमार सोनी, सुरेंद्र केसरी, सुमित सिंहल, अभिनव प्रसाद

सह-संपादकः अनुभव प्रताप सिंह, वरण साउथ इंडियन कह कर भेदभाव किया जाए। रेल तो पूरे राष्ट्र प्रकाश की सम्पत्ति है इसे नष्ट करने का सभी को बराबर हक है।

सीनियर रिपोर्टरः अविमुक्तेश भारद्वाज मणि शा, मनोज कुमार, सोनल शीराचार, अनुआ गर्ग, दामिनी गुप्ता, अंकिता मंगल, गौरव अग्रवाल, मयंक कुमार सिंह, श्वेता, अमोल दयानंद रावंत, अमन कुमार, सुशील जुनियर रिपोर्टरः मधुसूदन शर्मा, ख्वाति बोला "मैंने न्यूज़ में सुन है, वो भी ऐसा खुद के बोट के लिए ही दास, निष्ठा शर्मा, अभिषेक मीना, निधि कर रहे हैं।" अब बच्चा तो बच्चा ठहरा, उसे राज की महानता हरयानी, प्रतिक भार्कर, रजनीका का राज़ कैसे पता होगा। पर जनता बच्ची नहीं है। उसे पता है पटिदर, अनुराग कटियार, राहुल डे कि ठाकरे जी ये सब बोट के लिए नहीं जनकत्याण के लिए कर रहे हैं। इसलिए आशा है आने वाले चुनाव में, जनता भी उनकी आवाजाओं की कद्र करते हुए उन्हें बोट नहीं देंगी।

त्रैः आकाश दीप, सिद्धार्थ दोषी, सुकेश कुमार

## "किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता"

जत्रे के शुरुआत में कुछ छात्रों को senior हॉल में और कुछ को MMM में रखने का फैसला लिया गया। अब प्रथम सत्र के छात्रों में असमंजस की स्थिति को अच्छा कहें या बुरा। IIT जीवन में फँसे फँच्चे को भाट सत्र उनके विभिन्न मर्मों को इस बारे में व्यक्त करता है।

### दृश्य I

MMM 1: अरे यार, तुम लोगों का अच्छा है। हमें भी SENIOR हॉल में होना चाहिए।

HALL 1: नहीं यार, बहुत लोड है। MMM ही मर्म है।

MMM 1: हमें कुछ फँड़ा ही नहीं मिलता ना, न Depc का, न EAA का और न बंदी का।

HALL 1: ...और हमें तो सिर्फ़ फँड़ा ही मिलता है समय कहाँ...

MMM 1: Events हो जाते हैं और हमें पता ही नहीं चलता।

HALL 1: हम सोचते हैं पता न ही चले तो बेहतर होगा वरना काम काम और काम... उफ़।

### दृश्य II

MMM 2: हम लोगों का सही है यार। पूरी आजादी और मर्मती।

HALL 2: क्या मर्मती यार, IIP में अंधेरे में बैठकर या रुम में मर्खाकर...। मर्मती तो अपनी होती है।

MMM 2: अरे यार तुम लोगों को बहुत लोड रहता है।

HALL 2: लोड क्या, Maintain करना सीखो। बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

फँड़र friendly हो जाते हैं।

अगर सारांश देखा जाए तो इस फैसले से कुछ खुशा है और कुछ दुखी। किसी के लिए Seniors से मेलजॉल अच्छा है और किसी के लिए आजादी। स्थिति है 'कहीं खुशी कहीं गम' की। IIT के इस फैसले ने आजादी प्रेमियों को दुख दिया तो दूसरी ओर मेलजॉल के पक्ष के लोगों को खुशी।

इस फैसले ने परिसर में आए नए छात्रों को दो वर्गों में बाँट दिया जो जिदंगी के दो नए नए रास्तों पर आगे बढ़ रहे हैं। प्रशासन के फैसलों में समानता होनी चाहिए ताकि छात्रों में असंतोष की स्थिति उत्पन्न न हो।

जीवन की उलझी गुत्थी में फँसा हर इंसान सही और गलत की वास्तविकता से परेशान है। सही और गलत सापेक्ष पद हैं। किसी के लिए कुछ सही है और किसी के लिए वही गलत है। अंतर्भूमि हम कहना चाहेंगे कि चिंता न करो "जो होता है अच्छे के लिए ही होता है"। .. कभी किसी को मुकम्मल जहाँ नहीं मिलता।

कहीं जर्मी तो कहीं आसमाँ नहीं मिलता..।"

## Kgp Trends

"What are you staring at.. its just an iitian." अगर आप IIT

खड़गपुर से तालुकात रखते हैं तो कई बार चलते-फिरते इन पंक्तियों से रूबरू हुए होंगे। और शायद आपने भी कभी इन पंक्तियों से सजी कोई टी-शर्ट पहनी होगी। IIT खड़गपुर के पहनावे की अगर बात की जाए तो टी-शर्ट्स एक चर्चा का विषय जरूर है। और अगर इसके ट्रेन की बात की जाए तो काफी दिलचस्प बातें सामने आती हैं। हम एक-एक करके इन पहलूओं पर नज़र डालते हैं -



**जितनी श्रेणी के लोग, उतनी श्रेणी के t-shirts :** खड़गपुर में जितनी प्रजातियाँ हैं, उनका प्रतिनिधित्व करता एक अलग टी-शर्ट। बात चाहे डिपार्टमेंट्स की हो या विभिन्न सोसाइटीज की या फिर हॉल्स की (अपवाद जरूर है, पर फिर भी), उस प्रजाति की प्रमुख विशेषता को सामने लाता है उसका यह प्रतिनिधि। "attitude" दर्शाना हो या "ज्ञान", टी-शर्ट सबसे उत्तम ज़रिया है। आइये देखें कुछ प्रमुख प्रजातियों के रूपरूप -

**1. डेप-t-shirts :** यहाँ 'ज्ञान' झलकता है। भले ही वो ज्ञान किसी को समझ में न आए। ज्ञान बाँटने से बढ़ता है और डेप-t-shirts, इस सिद्धांत को सिद्ध करती है। ऐसे ही न जाने कितने लोगों को "127.0.0.1" या डोपिंग के फंडे मिले।

**2. हॉल-t-shirts :** यहाँ आपकी हॉल-भवित्ति झलकती है। अब आप इसे "attitude" का नाम दें या "hallitude" का, आपके ऊपर निर्भर करता है।

## आउट सोर्सिंग

## DC Top 5:

1. Obama victory speech
2. Blood Brothers(short film)
3. Positive(short film)
4. Maus(graphic novel)
5. Zeitgeist 2(documentary)



## Obama की जीत “Yes We Can!”

अम

रीका के राजनीतिक इतिहास के सबसे दिलचस्प Presidential campaign के बाद 4 नवंबर को बराक हुसैन ओबामा अमरीका के अगले राष्ट्रपति चुने गए। ओबामा की इस ऐतिहासिक जीत के बारे में कई खास बातें हैं - उनका अफ्रीकी-अमीकी होना, अनुभव की कमी (वे पहली बार senator बने) इत्यादि।

पर शायद सबसे विशेष और हम सबके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात ये है कि ओबामा ने वो कर दिखाया जो आज की दुनिया में नामुमकिन लग रहा था : एक पूरे देश को आशावादी बनाना। और वो भी उस देश को जिसकी नीतियों के कारण उनके अपने लोगों का भी प्रजातंत्र पर से विश्वास उठ रहा था .....

"Yes We Can!"

ओबामा के इस नारे ने मानो निराशा से भरे दिलों में जान फूंक दी। एक ऐसे कल का सापना दिखाया जहाँ लोग जाति या धर्म से नहीं आंके जाएँगे। इसमें कोई दोमत नहीं है कि शायद ये दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण पद है। अखबारों की भाषा में कहा जाए तो ओबामा अब "Leader Of The Free World" हैं। ऐसे में नए विचारों का आगमन ताजा हवा के

## Warhol और “15 minutes of fame”

यह कथन था अमरीकी कलाकार Andy Warhol का। उनका मानना था कि बीसवीं शताब्दी में मनुष्य के जीवन का केंद्रबिंदु – "Celebrity" तथा उससे जुड़े विचार, आदर्ते और जीवनशैली। ये उनकी कलाकृतियों में भी दिखता है- उन्होंने माओ जिंगेंग, मार्टिन मनचो, एन्विस प्रेसले जैसे celebrities की तर्फीरें बनाई थीं। रोजर्मर्ट के महत्वपूर्ण ब्रैंड नैम्स जैसे Coca-Cola, Campbell's Soup etc. को कला की तरह उन्होंने प्रस्तुत किया।

आज के युग में जब हर चैनल यहीं चाहता है कि आम जनता के जितना करीब जाया जा सके उतना अच्छा तब Warhol के कथन की महत्ता का अनुमान पता लगता है। वाकई आज हम सभी के पास और कुछ हो न हो "15 minutes of fame" ज़रूर हैं।

**3. सोसाइटी-*t-shirts* :** यहाँ आपकी कमर्ता का पता चलता है। इसका प्रचलन फिलहाल तो कम है, पर आने वाले दिनों में इनके popular होने की संभावना है।

**4. IIT-*t-shirts* :** इन टी-शर्ट्स के भी कई फायदे हैं। बंटी पटाना काम बहुत आसानी हो जाता है। अब आपने मुँह मियाँ मिट्ठू तो नहीं बन सकते न।

**5. Fest-*t-shirts* :** ये भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। 3-4 दिन पहन लो, फिर कमरे में पोछा लगाने में जरूर काम आते हैं।

टी-शर्ट्स देते मौसम की जानकारी - जनता क्या पहन रही है यह देख के यह अनुमान लगाना कठिन नहीं की अभी KGP में कौन सा मौसम चल रहा है। यहाँ ठंड, गर्मी या बरसात की बात नहीं हो रही, बल्कि यहाँ मौसम का तात्पर्य यहाँ चल रही हलचलों से है। अगर आपको खूब सारे "iitian" लिखे *t-shirts* दिखे तो समझिए कि नया अकादमिक सभ शुरू हुआ है या फच्चे पहली बार घर जाने की तैयारी कर रहे हैं। हॉल *t-shirts* नज़र आना चुनाव का सूचक है और अगर अगर भाँति-भाँति के "companies" के *t-shirts* दिखे तो *ppts* के मौसम का पता चलता है। इस संदर्भ में अगर "inter-iit जैकेट्स" की बात न की जाए तो यह लेख अधूरा रह जाएगा पर हम इसपर कुछ भी टिप्पणी करने से परहेज़ करते हैं। तैसे, हमें कुछ कहने की जरूरत नहीं। आप खुद ही समझदार हैं।

तो आज आप कौन सी *t-shirt* धारण कर रहे हैं?

## एक पहलू ऐसा भी

## चंद्रयान

इससे सहता और अच्छा कहीं नहीं



यह हमेशा कहा जाता है कि हम भारतीय केवल I या फिर सेवा क्षेत्र में ही आगे हैं किंतु क्या यह कथन पूर्णतया सत्य है? हमारा प्रथम चंद्र-अभियान चंद्रयान-1 इस कथन पर एक बड़ा प्रश्नचिन्ह खड़ा करता है। लोग यह कह सकते हैं कि आज जब चाँद पर मानव को कदम रखे लगभग चालीस वर्ष हो चुके हैं तथा जब विभिन्न देशों के इनने चंद्र-अभियान हो चुके हैं, तब उस स्थिति में हमारा यह अभियान कहीं पहिये को उल्टा घुमाना तो नहीं है। किंतु इस बार स्थिति दूसरी है। चंद्रयान-1 अभियान का पूरा बजट 80 मिलियन डॉलर है जो कि एक जम्बो जेट के मूल्य का भी आधा है तथा सोनी इंटरटेनमेंट द्वारा IPL के अधिकार हेतु दिए गए मूल्य के दसरे हिस्से से भी कम बजट है। किसी भी दूसरे देश द्वारा इनने कम बजट में कई भी चंद्र-अभियान नहीं किया गया है। चीन के चंद्र-अभियान Chang'e-1 का बजट 169 मिलियन डॉलर तथा जापान के चंद्र-अभियान Kaguya का बजट 260 मिलियन डॉलर था। NASA के भी प्रस्तावित LRO (Lunar Reconnaissance Orbiter) का बजट तो और भी अधिक लगभग 460 मिलियन डॉलर है। चंद्रयान का बजट ISRO के अंतिम तीन वर्षों के कुल बजट का केवल 4% ही है। किंतु कम बजट का यह मतलब नहीं है कि हमने गुणवत्ता में किसी प्रकार का समझौता किया है। यह ऐसा पहला चंद्र-अभियान है जिसमें 11 payloads(Instruments) हैं जो विभिन्न प्रकार के परीक्षण करेंगे तथा जिसमें से कई परीक्षण तो पहली बार किये जा रहे हैं। चीन के अभियान में केवल 6 payloads ही थे। चंद्रयान केवल चार वर्षों में पूरा हो गया तथा इसके अधिकांश भाग भारतीय वैज्ञानिकों एवं इंजीनियरों द्वारा ही निर्मित हैं। इसके साथ ही चंद्रयान में 6 विदेशी payloads हैं जो 26 अंतरराष्ट्रीय प्रस्तावों में से कड़े मानकों के आधार पर चुने गये हैं। छः विदेशी payloads होने के बावजूद भी हमारे वैज्ञानिकों ने बहुत कम विदेश यात्राएँ की जो कि इस अभियान के शीघ्र पूरा होने तथा कम बजट का होने का एक मुख्य कारण रहा। इसके साथ ही इस अभियान में प्रयुक्त यंत्रों में से 30% से ज्यादा पहले भी अभियानों में प्रयुक्त हुए हैं। साथ ही ISRO के वैज्ञानिकों ने कई pre-launch परीक्षणों को optimize कर उन पर होने वाले खर्च को भी काफी कम किया है।

**Meta dep में धमाका !!!**

29 अक्टूबर को थर्मी लैब में प्रयोग करते समय कुछ छात्रों की लापत्ताही के चलते एक furnace में गैस के अत्याधिक दबाव के कारण गैस विस्फोट हो गया। संयोग से किसी व्यक्ति को कोई हानि नहीं हुई।



### R.P हॉल में illu

2 नवंबर R.P हाल के लिए एक खास दिन रहा। इस दिन पहली बार r.p में interwing illu का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुछ प्रोफेसर्स को भी आमंत्रित किया गया।

इस प्रतियोगिता के अंतर्गत 2 बड़ी चटाई बनाई गई। साथ ही हॉल में सूपर ल्पेशल डिनर का भी प्रबंध किया गया। सेकंड ईयर के छात्रों के लिए यह एक अनूठा अनुभव रहा।

### समय के साथ बदलती लाईब्रेरी

लाईब्रेरी के समय में परिवर्तन किया गया है।

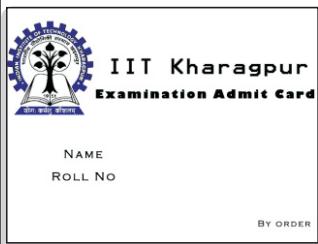
सोम-शुक्र 8:00 प्रातःकाल से 12:00 मध्यरात्रि

शनि-रवि 10:00 प्रातःकाल से 12:00 मध्यरात्रि



CENTRAL LIBRARY  
Indian Institute of Technology  
Kharagpur

विधार्थी अब अपने साथ अपनी दो किताबें भी ले जा सकते हैं। उम्मीद है कि यह छात्रों के लिए काफी मददगार होगा।



### हाल एडमिट कार्ड

छात्रों को सूचित किया जाता है कि उन्हें अब परीक्षा कक्ष में अपने I-कार्ड के साथ ही एक हाल एडमिट कार्ड भी लेकर जाना अनिवार्य हो गया है। इसे आप अपने हाल ऑफिस से ले सकते हैं। यह नियम इस वर्ष के end-सोमेस्टर परीक्षा से लागू होगा।

## Dramatics की धूम

इस सोमेस्टर में खड़गपुर की Dramatics societies की गतिविधियाँ सचाहनीय रही हैं। गौरतलब है कि वे सिर्फ campus पर ही नहीं, बाहर भी अपना जलवा दिखा रही हैं।

ETDS( English Technology Dramatics Society) का Freshers production "IT=?" काफी साराहा गया। इसके इलावा उन्होंने अपनी Annual production में विजय तेंदुलकर के प्रसिद्ध नाटक "शांतता ! कोर्ट चालू आहे !" के साथ सभी का दिल जीत लिया। किंतु सोने पर सुहागा तब हुआ जब उन्होंने इसी नाटक के साथ NLS, बैंगलोर के Theatre Fest Admit One की नाटक प्रतियोगिता में खर्च पदक हासिल किया। प्रथम वर्ष के छात्र रोहित को Best actor का पुरस्कार मिला।

### साँपों का आतंक

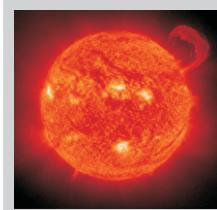
पेटल हॉल के B-124 रुम में शाम 7:30 बजे के करीब छात्रों की मौजूदगी में उनके रुम में एक साँप घुस गया, पर Warden ने साहसिक परिचय देते हुए उसे जला कर मार डाला। इससे कुछ दिन पहले MMM में भी साँप पाया गया था। आजाद हाल में भी एक द्वितीय वर्षीय छात्र के लैपी पर साँप पाया गया जो कि बाद में उसके हाथ पर चढ़ गया। गार्ड ने उस साँप को डंडे से मार डाला।



### नेशनल एडकेशन डे

अब प्रत्येक वर्ष 11 नवंबर नेशनल एडकेशन डे के रूप में मनाया जाएगा। हाईर एडकेशन डिपार्टमेंट ने यह कदम मौलाना अबुल कलाम आजाद के सम्मान में लिया है। गौरतलब है कि 11 नवंबर उनकी जन्मदिन सालगिरह है। इस उपलक्ष्य पर विभिन्न कालेजों में सेमिनार्स, लेक्चर्स एवं सिम्पोसियमों का आयोजन किया जाएगा।

### KGP को 2 नये रूकूलों की सौगत



सुनने में आया है कि केमिकल डिपार्टमेंट को 2 नये रूकूल्स : School of Biofuels एवं School of Solar Energy खोलने के लिए 10 मिलियन US\$ का grant मिला है।



### FELIX

दीवाली की शाम को रंगीन बनाने के लिए MMM द्वारा FELIX का आयोजन किया गया। इसमें MMM के छात्रों द्वारा गीत-संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के अंत में IITKGP की दीवाली परंपरा के अनुसार रंगगुल्लों से भरी मटकी को VP अर्नंद ने MMM के HP बनोत लखपति को प्रदान की।

Entrepreneurship का E-Summit शुरू हो रहा है 2 जनवरी से और यह 11 जनवरी तक चलेगा। एक तरह से यह सबसे ज्यादा दिन चलने वाला Summit होगा।



## Technology का टॉन कोना

